International Journal of Applied Research 2017; 3(9): 616-618

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(9): 616-618
www.allresearchjournal.com
Received: 25-07-2017
Accepted: 28-08-2017

राकेश कुमार
एसएस मास्टर, राजकीय मॉडल सीनियर सेकेंडरी स्कूल महेंद्रगढ़ ।

Corresponding Author:
राकेश कुमार
एसएस मास्टर, राजकीय मॉडल सीनियर सेकेंडरी स्कूल महेंद्रगढ़ ।

अंग्रेजों से पहले भारत की गुलामी की कहानी

राकेश कुमार

सारांश
हम भारत की आज़ादी का इतिहास तो बहुत सुनाते हैं पर आज समय है हमें अपनी नाकामयाबियों को भी जानने का और भारत की आज़ादी के साथ-साथ भारत की गुलामी को भी जानने का देश। हम सभी भारतवासी जानते हैं कि भारत की आज़ादी का जश्न 15 अगस्त मनाया जाता है क्योंकि इसी दिन 1947 को भारत को आज़ादी मिली थी अंगरेजों से और अंगरेजो के 200 सालों की गुलामी से। पर एक बहुत बड़ा सवाल उठता है अगर हम भारत के इतिहास को देखें तो की क्या भारत केवल अंगरेजो का ही गुलाम था? क्या भारत में कोई और विदेशी नहीं आए कभी? क्या उन्होंने राज नहीं किया जैसे अंगरेजों ने किया? क्या है भारत की गुलामी का इतिहास? क्यूँ अधूरी है हमारी 15 अगस्त को मिली आज़ादी? आज हम इसके बारे में जानते हैं।

शब्द कुंजी : नाकामयाबियों, गुलामी, अतिक्रमण, आतताई

प्रस्तावना

भारत में हुए अब तक के अतिक्रमण:

1. सबसे पहले क्राइस्ट से 326 साल पहले अलेक्जेंडर ने आक्रमण किया और भारत में 19 महीनो तक रहा और ये भारत की धरती पर सबसे पहला विदेशी आक्रमण था।

2. इसके बाद दौर आया मुग़ल आतताइयों का जिनका उद्देश्य इस्लाम को भारत में फ़ैलाने के साथ-साथ भारत के दुसरे देशों के साथ हो रहे व्यापार (ज्ञात रहे की भारत शुरू से सोने की चिड़िया और व्यापार का मुख्या केंद्र मन जाता रहा है) पर एकाधिकार जमाना भी शामिल था। इसी उद्देश्य को लेकर साल 636-37 में खलीफा उमर ने समुद्री रास्ते से भारत के पश्चिमी तट ठाणे के पास त्रौम्बे पर आक्रमण किया। पर यहाँ उसे हार का सामना करना पड़ा। अब समुद्री रास्ते से मिली हार के चलते मुग़ल सेना ने साल 644 में जमीनी रास्ते से आक्रमण किया मकरान के तरफ़ से पर यहाँ भी उन्हें हार का सामना करना पड़ा। पर भारत के दुर्भाग्य के चलते साल 711 में मुग़ल मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में जित गए भारत में। साल 711 में इन मुगलों की सोच थी की सीरिया, पालेस्तिन, इजिप्ट और परसिया कि सुखी धरती को जितने से इस्लाम को तो फैला दिया पर यहाँ क्यादा कुछ फ़ायदा नहीं होने वाला। और तब इन्होने इस्लाम को फ़ैलाने और व्यापार पर एकाधिकार या भारत के बहुमुखी व्यापार और सोने की चिड़िया को छिनने के लिए मुगलों ने भारत के ऊपर आक्रमण करने चालू किये। इस प्रकरण में इन्होने सबसे पहले सिंध को अपने कब्जे में लिया। पर आठवीं शताब्दी तक भारत के और भाग तक में इस्लाम को मानने वाले मुगलों का आतंक नहीं फ़ैल पाया। अब इस समय में मुगलों ने क्या किया वह देखते हैं जरा।

* मुग़ल जानकारों ने हिन्दू जानकारों से भारत की सभ्यता और संस्कृति को जानना चालू किये।
* संस्कृत में लिखे कितने ही खगोलीय, ज्योतिष, गणित, चिकित्सा पद्धति इत्यादि को अरबी में अनुवाद कराया गया। साथ ही प्रभाव ज़माने के लिए कुछ अरब के कार्यों को भी संस्कृत में अनुवाद कराया गया।
* मुगलों ने 1-9 तक की संख्या को भारतीयों से सिखा।
* शतरंज जैसा खेल भी मुगलों ने हम भारतीयों से सिखा।
* भारतीय डाक्टरों को अरब के हॉस्पिटल में इलाज़ करवाने के लिए ले जाया गया।
* साथ ही सिंध में इस्लाम को सबसे बड़ा धर्म स्थापित कर दिया गया।

पर ये मुग़ल यहीं नहीं रुके। ये तो मात्र एक शुरुवात थी। आगे चल कर इनका असली और विकृत चेहरा सामने आना शुरू हुआ।

3. इसके बाद बार आई तुर्की के मुहम्मद गजनी का। गजनी अफगानिस्तान का गामिनी वंश का शासक था।

इसने भारत पर आक्रमण यहाँ राज करने के लिए नहीं परन्तु भारत की सम्पदा को लूटने के इरादे से आया था और इसी इरादे के चलते गजनी नामक आततायी ने भारत साल 1000 से 1027 के दौरान पर 17 बार अपने कुत्सित विचारों से प्रभावित हो जिहाद के नाम पर आक्रमण किया। गजनी ने साल 1001-1008 के मध्य राजा जयपाल और राजा आनंदपाल को हराया, 1009 में नागरकोट, 1014 थानेसर, 1015 कश्मीर, 1018-19 मथुरा और कन्नौज, 1021 कालिंजर, 1023 लाहोर और सबसे भयानक आक्रमण रहा इसका साल 1025 का सोमनाथ मंदिर का आक्रमण जिसमे गजनी ने ना केवल उस मंदिर को लूटा। पर यहाँ एक और घटना घटी की जब ये मंदिर से लुटे धन को ले जा रहा था अपने साथ तो जाट राजपूतों ने गजनी पर आक्रमण किया और फलस्वरूप गजनी ने साल 1026 में सत्रहवीं और अंतिम बार सोमनाथ पर आक्रमण किया और सोमनाथ मंदिर को लूटने के साथ-साथ उस मंदिर को पूरी तरह नेस्तोनाबुत कर दिया। 30 अप्रैल 1030 को गजनी की मौत हुई पर उसके बेटे मसूद ने भारत पर आक्रमण किया और कश्मीर पर अपना अधिकार जमा लिया।

4. मुहम्मद गोरी की बारी आई इनके बाद। मोहम्मद गोरी ने अपने भाई गिसुद्दीन के साथ मिल कर 1175 और 1206 के मध्य भारत पर आक्रमण किया। सबसे पहले गोरी ने 1175 में भारत पर आक्रमण कर मुल्तान पर कब्ज़ा किया, फिर 1186 में लाहोर। फिर उसने अपने भाई की मौत के बाद इसने अपने राज्य को फ़ैलाना चालू किया और आज की मौजूदा किताबो में पढाये जा रहे पाठो के आधार पर इसने कन्नौज के राजा जयचंद को 1193 में हराया बल्कि सच्चाई में जयचंद की सहायता से इसने राजा पृथ्वी राज चौहान को हराया और 1194 में गद्दार जयचंद को भी हरा उसे मौत के घाट उतर दिया था गोरी ने। क्या कारन था जयचंद को मारने का गोरी का क्युकी जयचंद ने तो गोरी का साथ दिया था एक मुस्लिम शासक का साथ पृथ्वी राज चौहान के खिलाफ कारन साफ़ है कि गोरी और सभी जानते हैं कि जो अपने लोगों का और सबसे पहले अपने धर्म का नहीं हुआ वह किसी और का क्या होगा और इसी के चलते जयचंद को मरना पड़ा। पर आज तो पता नहीं कितने जयचंद हो गए हैं इनका क्या हस्र होगा ये तो हम केवल सोच सकते हैं।

चलिए छोडिये इन बातों को हम आगे बढ़ते हैं। इसके बाद गौरी ने 1206 में मरने और उसके पहले अपने लौटने तक में गंगा और घाघरा के दोवाब के साथ-साथ बंगाल तक पर अपना साम्राज्य स्थापित कर गया और इसके साथ उसने अपने एक गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक को वहाँ का शासक बना गया जिसे आगे चल कुतुबुद्दीन ऐबक ने गुलाम वंश की स्थापना कि भारत में। मोहम्मद गोरी के उपरांत निम्नांकित शासन काल गुलाम शासन ... 1206-1290
खिलजी शासन ... 1290-1320
तुघ्लक शासन ... 1320-1412
सैयद शासन ... 1414-1451
लोदी शासन ...1451-1526

5. अब आयी मुग़ल साम्राज्य का बारी। मुग़ल असल में तुर्क थे। पहला मुग़ल शासक था बाबर जो की तुर्किस और चंगेज का मिश्रित रूप था।

बाबर 1526-1530, हुमायूँ 1530-1540 और 1555-1556, अकबर 1556-1605, जहाँगीर 1605-1627, शाहजहाँ 1628-1658, औरंगजेब 1658-1707, बहादुर शाह 1707-1712, जहानदार शाह 1712-1713, फुर्रुख्सियर 1713-1719, रफ़ी-उद-दराज 1719-1719, रफ़ी-उद-दौलत 1719-1719, निकुसियर 1719-1743, मोहम्मद इब्राहीम 1720-1744, मोहम्मद शाह 1719-1720, 1720-1748, अहमद शाह बहादुर 1748-1754, आलमगीर II 1754-1759, शाह जहाँ III 1759-1759, शाह आलम II 1759-1806, अकबर शाह II 1806- 1837, बहादुर शाह II 1837-1857.

बाबर की लड़ाई सबसे बड़ी लड़ाई राजा राणा सांगा के साथ हुई जिसमे बाबर जीत गया और इस जीत के चलते भारत में मुग़ल साम्राज्य की स्थापना हुई और इस लड़ाई को बाबर ने जिहाद की संज्ञा दी थी। पहली ही लड़ाई में बाबर ने दिल्ली और आगरा को जीत लिया जिसे बाबर ने अपने लड़ाको और तोपों के वज़ह से जीती और साथ ही और राज्यों को जीतता गया और मुग़ल साम्राज्य को फैलता गया। पर जब बाबर की मौत हुई और हुमायूँ गद्दी पर बैठा तब शेर शाह सूरी जो की एक अफगानी था ने हुमायूँ को हराया और भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया। भारत छोड़ हुमायूँ अपनी शक्तियाँ बटोरने में लगा ताकि फिर से भारत में अपना राज्य स्थापित किया जाये और हुमायूँ ने ऐसा किया भी पर ज़्यादा समय राज नहीं कही कर पाया और सीढियों से गिरने के वज़ह से मारा गया। हुमायूँ के मरने के बाद उसके 13 साल के लड़के अकबर को गद्दी पर बैठाया गया। यहाँ से शुरू हुआ असली मुग़ल साम्राज्य भारत में। क्युकी अकबर ने यहाँ चलें चलनी शुरू करी जो कमोबेश आज भी चल रही हैं पर कोई मानाने को तैयार नहीं। अकबर अपने लोगों को लड़ाई से बचाना चाहता था क्युकी उस समय राजपूत और साथ और राजा मुगलों को उखाड़ने में लगे हुए थे इस वज़ह से वह रिश्ते मज़बूत करने के नाम पर और भाईचारा बढ़ने के नाम पर राजपूत लड़कियों से शादी के प्रस्ताव भेजने लगा साथ ही उन राज्यों को अपने में मिलाने लगा। पर इसी देश में महा राणा प्रताप जैसे लोग भी थे जिन्होंने उसके आगे झुकना तो मंजूर नहीं किया पर हल्दी घटी की लड़ाई लड़ी और उस लड़ाई को देख ख़ुद अकबर भी एक बार को डर गया था पर एक काम तो हमेसा से आया इन मुगलों को की कैसे लोगों को अपने से जोड़े बहले झूट बोल कर (ज्ञात हो की इस्लाम में झूट बोलना मना है पर ये हमेसा से झूट बोलते आये जिसे ये ख़ुद ताकैयाह का नाम देते हैं)।

इसी के सहारे जब अकबर को लगा वह हर जायेगा तो इसने महा राणा प्रताप के कुछ सहयोगियों को अपने में मिला लिया और इसके चलते महा राणा प्रताप को हार का मुंह देखना पड़ा। अकबर ने यहाँ तक की उन राज्यों को भी नहीं छोड़ा जहाँ औरत थी गद्दी पर। ऐसी ही एक महा रानी थीं चाँद बीबी जो अकबर के साथ हुई लड़ाई नहीं जीत सकीं और 1596 में उनके राज्य अहमदनगर को मुग़ल राज्य में मिला लिया गया।

ऐसा कहा जाता है या कहें तो ऐसा हमें पढाया जाता है कि अकबर हिन्दुवों को ले कर बहुत उदार था। पर इसी अकबर ने 24 फरवरी 1568 को 30, 000 बंदी बनाये गए राजपूतों को मौत के घाट के उतरवा दिया।

ये शायद एक दिन में दी गई सबसे बड़ी मृत्यु दंड की सजा होगी जिसमे इतने लोग मरे। इस सामूहिक हत्याकांड को अब्दुल फजल नामक अकबर का इतिहासकार दरबारी ने लिखा है। अकबर ने दिन-इ- इलाही नमक धर्म को भारत का धर्म बनाया। ज्ञात रहे की इस्लाम में आप इस्लाम के अलावा कुछ नहीं छोड़ सकते हैं फिर अकबर ने तो इस्लाम के बदले ही एक नया धर्म बना दिया था तो इसके क्या कहेंगे और इसको क्या कहा जाता है आज ये तो शायद सभी जानते होंगे।

अकबर की मृत्यु के उपरांत उसका पुत्र मोहम्मद सलीम जिसे हम जहाँगीर नाम से भी जानते हैं वह बैठा दिल्ली की गद्दी पर। पर जहाँगीर अपनी बीबी नूर जहाँ के इश्क़ में ही फ़ना रहता था और इसके साथ-साथ अपने राज्य का कार्यभार भी एक तरह से उसने अपनी पत्नी के कंधो पर छोड़ रखा था। जहाँगीर ने भी बहुत-सी लड़ियाँ लड़ीं पर अकबर जैसा कुतनितिग्य नहीं हुआ। इसके बाद आया शाह जहाँ जो अपने पिता सामान ही हुश्न का दीवाना था अपनी बेगम मुमताज़ महल का। इसने पोर्तगीज से कई लड़ियाँ लड़ीं साथ ही ये अहमदनगर का राज्य बीजापुर के शासक के साथ साँझा रूप में चलता था। और जब इसने देखा कि परेसनियाँ ज़्यादा बढ़ रही हैं तो इसने अपने आपको राज-पाट से अलग कर लिया और तभी इसका बेटा औरंगजेब सुल्तान बना और उसने मानवता कि सारी हदें तोड़ दिन। औरंगजेब ने अपने भाइयों को मारा गद्दी के लिए वह तो किया ही साथ ही अपने बूढ़े बाप शाह जहाँ को आगरा के किले

में क़ैद खाने में डाल दिया और क़ैद खाने में ही शाह जहाँ की ताज महल देखते हुए मौत हुई। अब इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि जो इन्सान सुल्तान बनने के लिए अपने बूढ़े बाप को तिल-तिल कर मरने के लिए अँधेरी काल कोठरी में बंद सकता है वह और लोगों और दुसरे धर्मो को मानने वालों के साथ कैसे पेश आता होगा। औरग्जेब के ज़माने में सबसे ज़्यादा मंदिरों को तोडा गया, मूर्तियों को विखंडित किया गया और मुजुदा बहुत से मंदिरों को तोड़ मस्जिद बनाया गया।

इसकी गन्दी निगाह यहाँ तक की पूरी के मंदिर तक पर पड़ी थी पर कैसे भी करके उस मंदिर को उसमे राखी प्रतिमा बचाया गया। ये अलग बात रही की सबसे ज़्यादा बार बंद होने वाला और सबसे ज़्यादा समय तक बंद रहने वाला मंदिर बना पूरी का मंदिर। औरंगजेब ने 1679 में हिन्दुवों पर जाजिया लगाया। इसी दौरान इसने सिखों के नौवें गुरु-गुरु तेग बहादुर सिंह जी को मौत के घाट उतारा। और इन सारी घटनाओं ने राजपूतो, सिखों और जाटों में एक विद्रोह फैला दिया और इन लोगों ने अलग मोर्चा खोल लिया औरंगजेब के खिलाफ। कुछ समय तक तो औरंगजेब लड़ता रहा पर बाद में उसने राजपूतों के साथ संधि कर ली जिसे वह बार-बार तोड़ता रहा और जिस वज़ह से मथुरा के आस पास के जात उसके मरने के समय तक उसे परेसान करते रहे। औरंगजेब को सबसे ज़्यादा परेशानी रही वीर छत्रपति शिवाजी से। और औरंगजेब मराठों को काबू में नहीं कर पाया अपने जीवन पर्यंत। इन्ही सबके बिच में साल 1600 में ही सर थोमस रॉय के भारत आगमन के समय व्यापार की अनुमति मिल चुकी थी तत्कालीन मुग़ल शासक के द्वारा। और 1616 में मुसलिपत्तम में अंगरेजो को पहली फैक्ट्री डालने की अनुमति मिली थी।

पर अभी भी भारत पर मुगलों का शासन चल ही रहा था पर बहादुर शाह I के 1712 में मौत के बाद कोई अच्छा मुग़ल शासक न होने के चलते मुग़ल शासक मोहम्मद शाह के शासनकाल में भारत ने नादिर शाह

और उसके सिपहसलार अहमद शाह अब्दाली नामक मुगलों का भारत पर आक्रमण झेला। और इस तरह मुग़ल साम्राज्य शांत हुआ। क्युकी उस समय अंगरेजी ताकतें भी पनपने लगी थीं और इन मुगलों के अलग-अलग जगह पर बिठाये इनके भरोसेमंद सिपहसलार भी अब उन जगहों को अपना बनने में लगे थे।

इसी बिच एक और शासक हुए टीपू सुल्तान जिनका नाम भारत में बड़े अदब से लिया जाता है पर कितने लोग जानते हैं कि यही वह टीपू सुल्तान थे जिन्होंने 1750-1799) तक राज किया पर इनका एक फतवा

निकला हुआ था कि सामूहिक धर्म परिवर्तन का। ये हिन्दुवों को मुसलमान बना देना चाहते थे। जिसे इतिहासकारों ने या तो दबा दिया या आज उन बातों को सामने नहीं लाया जाता है| और हमें आधी-अधूरी जानकारी दी जाती है हमारे देश के इतिहास के बारे में|

मुग़ल साम्राज्य का मकसद:

जितने भी मुग़ल शासक हुए भारत में या जो भी आतताई आये उनका मकसद था भारत की अतुल्य सम्पदा और धन-वैभव को लूटना और इसके साथ-साथ धीरे-धीरे और एक प्रभावपूर्ण तरीके से भारत से हिंदुत्व को मिटा इस्लाम और इस्लामिक सभ्यता को स्थापित करना| मुगलों ने बहुत कोशिस करी हमारे भारत की सभ्यता, भाषा और शिक्षा पद्धति (जैसे नालंदा विश्वविद्यालय को मटियामेट करना) को ख़तम करने की| मुगलों ने भारत के कई जगहों के मंदिरों को तोडा जैसे सोमनाथ, मथुरा, बनारस, अयोध्या, कन्नौज, थानेस्वर और इत्यादि इत्यादि| मंदिरों के पुजारियों और पजा करने वालों का सामूहिक हत्या किया गया| औरतों को मुग़ल अपने साथ अरब ले गए जहाँ उनके साथ पता नहीं कितनी ही यातनाएं दी गई होंगी और पता नहीं कितने हाथों हमारे देश की हिन्दू औरतों को बेचा गया| कारण हिन्दुवों के हार का: १. भारत के शासकों में एकता नहीं थी बल्कि ये मुग़ल पूरी तरह एकता के साथ रहते थे। (आज भी स्थिति वैसी ही है और हिन्दू बँटा हुआ है पर ये मुस्लिम एक हैं हमारे खिलाफ) २. भारतीय हमेसा से सीधे-साधे रहे और किसी और देश पर आक्रमण नहीं करते थे इस लिए इनकी सेनाएं अपने आस-पास के लोगों से रक्षा के अनुरूप ही सुसज्जित थीं जबकि मुग़ल आततायी और आक्रमणकारी होने के कारन हमेसा अपनी रणनीति और सेना को आगे बढ़ाते गए।

संदर्भ

1. उत्सव पटनायक और मंजरी डिंगवान (संस्करण), जंजीरों की सेवा: भारत में बंधन और दासता (मद्रास, 1985)
2. ऐतिहासिक सर्वेक्षण स्लेव-मालिक समाजों। ब्रिटानिका.कॉम। 4 दिसंबर 2011 को लिया गया।
3. इस्लामी कानून और ब्रिटिश भारत में औपनिवेशिक मुठभेड़ संग्रहीत 29 अप्रैल 2009 वेबैक मशीन
4. उपिंदर सिंह (2008)। प्राचीन और प्रारंभिक मध्यकालीन भारत का इतिहास: पाषाण युग से 12 वीं शताब्दी तक। पियर्सन शिक्षा। पी। 191. आईएसबीएन 9788131711200।
5. स्टेफनी जैमिसन; जोएल ब्रेरेटन (2014)। ऋग्वेद: 3-खंड सेट। ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस। पीपी। 56-57। आईएसबीएन 978-0-19-972078-1।
6. थॉमस आर। ट्रुटमैन (2006)। आर्य और ब्रिटिश भारत। योदा प्रेस। पीपी। 213-215। आईएसबीएन 978-81-902272-1-6।
7. असको परपोला (2015)। हिंदू धर्म की जड़ें: प्रारंभिक आर्य और सिंधु सभ्यता। ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस। पीपी। 102-103 आईएसबीएन 978-0-19-022691-6।
8. कौआलय; आरपी कंगले (1986)। कौटिल्य अर्थशास्त्र, भाग २। मोतीलाल बनारसीदास। पीपी। २३५-२३६ आईएसबीएन 978-81-208-0042-7।
9. भारतीय गुलामों में आधुनिक दासता और बाल श्रम - बाल मजदूरी बंद करो। बाल मजदूरी बंद करो। 11 मई 2015। 9 मार्च 2016 को लिया गया।